शोध सारांश

कहानी सामाजिक जीवन के प्रत्यक्षीकरण की प्रतिलिपि है। सामाजिक जीवन की समस्त गतिविधियों को कहानीकार अपनी लेखनी के द्वारा समाज के सामने रखता है। स्वातंत्र्योत्तर कहानी मनुष्य के जीवन से जितनी जुड़ी है उतनी साहित्य की कोई अन्य विधा नहीं जुड़ पाई है । साठोत्तरी हिंदी कहानियों में समाज, परंपराएं, रूढियाँ, अंधविश्वास, स्त्री-पुरुष संबंध, सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक, धार्मिक एवं वैज्ञानिक विचारों में नवीनता की स्पष्ट छाप मिलती है। समसामयिक जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में आज मानवीय संबंधों का स्वतंत्र, समर्थ रूप उभर कर आ रहा है। उसके प्रत्येक रूप को प्रतिबिंबित करने में कहानी सर्वथा सक्षम है।

ज्ञानरंजन की कहानियों की विषयवस्तु काल्पनिक न होकर, समाज में घटित घटना तथा लेखक के जीवनानुभव से ली गई है। उनकी कहानियाँ आज के समाज, परिवेश से जुड़ी हुई कहानियाँ हैं। प्रगति एवं परंपरा दोनों से कहानीकार का अटूट संबंध रहा है इसी कारण स्वातंत्र्योत्तर गतिविधियों, परिस्थितियों का प्रतिफलन इनकी कहानियों में मिलता है। पुरानी तथा नयी पीढ़ी के वैचारिक संघर्ष को भी ज्ञानरंजन ने बड़े सूक्ष्म तरीके से उजागर किया है।

इनकी कहानियों में स्वतंत्र भारत की सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक परिस्थितियों एवं संबंधों में आए परिवर्तन को रेखांकित किया है। ज्ञानरंजन साठोत्तरी पीढ़ी के अग्रणी कहानीकार के रूप में जाने जाते हैं। साठोत्तरी कहानी की सबसे बड़ी पहचान उसकी बदलती संवेदना है। संयुक्त परिवार की प्रथा प्रारंभ से ही भारतीय समाज व्यवस्था का प्रमुख आधार रही है। पाश्चात्य शिक्षा के विकास तथा आर्थिक संघर्ष के कारण यह प्रथा टूट रही है। भारतीय समाज में मानवीय संबंधों के विघटन का बड़ा एवं महत्वपूर्ण कारण आर्थिक संघर्ष भी है। ज्ञानरंजन ने अपनी कहानियों में

पारिवारिक तथा सामाजिक आपसी संबंधों को बड़े सूक्ष्म तरीके से दर्शाया है। औद्योगिकरण एवं नगरीकरण के संत्रास को झेलने वाले ज्ञानरंजन के पात्र संबंधों की दरार के शिकार है। वे पूंजीवादी व्यवस्था से प्रपीड़ित मानव मूल्यों की छटपटाहट को अभिव्यक्त करते हैं। उस दौर में परिवार विघटित हो रहे थे। परिवार व्यवस्था की पीढियों से स्थापित मान्यताएं ध्वस्त हो रही थी। व्यक्ति अपने ही आवृत्त में बंदी होकर रहने लगा था। यहाँ तक कि व्यक्ति अपने घर के प्रति भी अब संवेदनशील नहीं रहा था। इसी व्यक्ति को ज्ञानरंजन ने अपनी कहानियों में दिखाया है।

ज्ञानरंजन ने अपनी कहानियों में मध्यवर्गीय पात्रों की विसंगति, असंतोष, बेचैनी, कुंठा संत्रास, अजनबीपन और अकेलेपन को चित्रित किया है। समकालीन यथार्थ पर ज्ञानरंजन की मजबूत पकड़ है। सहज मानवीय संवेदना उनकी कहानियों के केंद्र में है।

शुरुआत में ज्ञानरंजन जितना परिवार केंद्रित होते हैं, व्यक्तिगत-पारिवारिक संबंधों को आधार बनाकर कहानी रचते हैं, बाद में वह परिवार से आगे सामाजिक और राजनीतिक परिवर्तनों को भी अपनी कहानियों में दर्शाते हैं।

ज्ञानरंजन ने अपनी कहानियों के माध्यम से माता-पिता, भाई, बहन से अलग होते हुए आज के आदमी को चित्रित किया है। मानवीय संबंधों में आए हुए विघटन या बदलाव को, जिसमें पारिवारिक संबंध हो या सामाजिक, इन्हें बड़े सूक्ष्म तरीके से रेखांकित किया है। वर्तमान युग में पारिवारिक संबंधों में व्यापक परिवर्तन दृष्टिगत होता है। जिसके कारण परंपरागत मान्यताएं अब क्षीण होती नजर आ रहीं है। पारिवारिक संबंधों में संघर्ष, तनाव आदि दिखाई पड़ता है।

परिवार में पुरानी और नयी पीढ़ी में वैचारिक अंतर के आधार पर पिता-पुत्र के संबंधों में दरार पड़ने लगी है। पिता-पुत्र का संबंध पहले की तरह न होकर बराबरी का हो गया है। संतान माता-पिता को अपनी आकांक्षाओं के अनुरूप सहायक न पाकर स्वच्छन्द तथा विद्रोही हो जाती है। इस तरह ज्ञानरंजन की कहानियों में पारिवारिक संबंधों में टकराव दिखाई देता है।

ज्ञानरंजन की कहानियाँ अपने समय की निर्मिति हैं। उन्होंने समाज में घटित घटनाओं को कहानियों के माध्यम से रेखांकित किया। इसीलिए न केवल साठोत्तरी हिंदी कहानी बल्कि संपूर्ण हिंदी कहानी जगत में ज्ञानरंजन की कहानियों की विशिष्ट पहचान है।

ज्ञानरंजन की कहानियाँ आज के व्यक्ति की मानसिकता की स्थितियों की कहानियाँ हैं। वह अलगाव और अकेलेपन की परिवेशजन्य संरचनाओं को व्यक्ति, परिवार, करीबी और बाहरी संबंध, संस्थाओं और बाह्यजगत के गहरे जीवन संदर्भों के जरिये पहचानते हैं। उनकी कहानियों में परिवेश के बीच आम आदमी की जिंदगी तथा उसकी उलझनों में जिजीविषा की प्रवृत्ति देखने को मिलती है। आधुनिक जीवन के संदर्भ में पुराने नए मूल्योंतथा पीढियों के संघर्ष, संयुक्त परिवार का विघटन, टूटता हुआ दांपत्य जीवन, सेक्स को लेकर नैतिकता-अनैतिकता का द्वंद्व, वर्तमान जिंदगी में आए अजनबीपन, घुटन, पीड़ा आदि को सहज ढंग से अभिव्यक्ति मिली है।

वर्तमान समय में हम देखते हैं समाज में परिवार, व्यक्ति और व्यक्तित्व की टूटन-घुटन आदि की समस्याएं फैली हुई है। इसीलिए ज्ञानरंजन की कहानियाँ आज समय सापेक्ष दिखाई देती हैं।